भारत–भारतीः समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 शिखा तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय, भदोही

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध काव्य कृति भारत–भारती (1912) कई सामाजिक आयामों पर विचार करने के लिए एक मार्ग प्रशस्त करती है। भारत–भारती में निहित राष्ट्रीय–चेतना के स्वर ने ही हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गौरव की भावनाएं उत्पन्न की। भारत–भारती की आरम्भिक पंक्तियॉ जो अतीत भारत वर्ष एवं भारतीयों के प्रशस्तमान बिन्दुओं का अंकन है, अनायास ही मानस पटल पर अंकित हो उठती है–

''हम कौन थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।''[1]

'भारत–भारती' लिखने पर 'भारतभारतीकार' (मैथिलीशरण गुप्त) को 1936 ई0 में 'महात्मा गाँधी' 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा से विभूषित किये। 'राष्ट्रीय कविता' को 'हिन्दी साहित्य कोश' में इस प्रकार परिभाषित किया गया है–

''राष्ट्रीय कविता के अन्तर्गत उन कविताओं को लिया जा सकता है, जिनमें देश को एक इकाई मानकर काव्य सर्जन किया गया हो। इस प्रकार की रचनाएँ किसी सीमा तक एक विशिष्ट काल में संस्कृति और सभ्यता की जो सीमा होती है, उसका प्रतिनिधित्व करती हैं।''[2]

'भारत–भारती' में उपर्युक्त तत्त्वों जैसे–संस्कृति, सभ्यता, देश के गौरव का वर्णन आदि को प्रत्यक्षतः दृष्टिगत किया जा सकता है। 'भारत–भारती' का सर्वप्रथम प्रकाशन 1969 ई0 में हुआ। 'हरिगीतिका छन्द' में रचित इस रचना के तीन खण्ड हैं–

1. अतीत खण्ड 2. वर्तमान खण्ड 3. भविष्यत खण्ड

अतीत खण्ड में भारत वर्ष के प्राचीन गौरव की प्रशंसा की गई है। भारतीयों की वीरता, आदर्श, बुद्धि–विद्या, कला–कौशल, सभ्यता–संस्कृति, साहित्य–दर्शन, स्त्री–पुरुषों आदि का वर्णन करते हैं। 'भारत–भारतीकार', 'भारत–वर्ष' की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए लिखता है–

भू–लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला–स्थल कहाँ।
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ

सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?

उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारत वर्ष है।।[3]

'वर्तमान खण्ड' में कवि ने साहित्य, संगीत, धर्म, दर्शन आदि के क्षेत्र में होने वाली अवनति, रईसो के कारनामे, मंन्दिरों की दुर्गति एवं स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन किये हैं। अर्थात् भारत की वर्तमान अधोगति का चित्रण है।

'भविष्यत खण्ड' में भारतीयों को उद्‌बोधित करते हुए देश के मंगल की कामना की गयी है। 'भारत–भारती' के सन्दर्भ में 'बच्चन सिंह' लिखते हैं–'' **'भारत–भारती' तो उस समय की राष्ट्रीय भावना की सिस्मोग्राफ है। इसे लिखने की प्रेरणा उन्हें 'मुसद्‌दसे–हाली' और 'कैफी' के 'भारत–दर्पण' से मिली।''**[4]

'मैथिलीशरण गुप्त' पराधीनता में यह काव्य ग्रन्थ लिख रहे थे, उस समय चारों तरफ निराशापूर्ण वातावरण था परन्तु वे हताश होकर नहीं बैठे अपितु अपने काव्य ग्रन्थ द्वारा लोगों में राष्ट्र चेतना जागृत किये। इस सन्दर्भ में एक पंक्ति उल्लेखनीय है–

'वीरों! उठो, अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो।
निज देश को जीवन सहित तन–मन और धन भेंट दो।'
'वैश्यों ! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का।
सब धन विदेशी हर रहे हैं, पार है क्या क्लेश का।''[5]

'मैथिलीशरण गुप्त' सच्चे अर्थों में साहित्य में राष्ट्र–चेतना का स्वर मुखरित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि कला का उद्‌देश्य मनोरंजन मात्र नहीं होना चाहिए। अपितु वह लोककल्याण की विधायक भी होनी चाहिए–

''केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।''[6]

'भारत' की वर्तमान दुर्दशा का कारण परतन्त्रता है। 'परतन्त्रता' मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ उपाय आत्मगौरव है। जिस भारत वर्ष का सर्वश्रेष्ठ धन कभी आत्मसम्मान हुआ करता था उसी भारत में अपने अपमान के प्रतिकार की भी शक्ति शेष नहीं है। इस दुर्दशा पर 'गुप्त' ने अपनी व्यथा इस प्रकार व्यक्त किये हैं–**'यद्यपि हताहत गात में कुछ सांस अब भी आ रही है/पर सोच पूर्वापर दशा में मुँह से निकलता है यही/ जिसकी अलौकिक कीर्ति से उज्ज्वल हुई सारी मही/था जो जगत का मुकुट, है क्या हाय, यह भारत वही?''**[7]

भारत का गौरव सिर्फ स्मृति बनकर रह गया है। उसका प्राचीन गौरव धुँधला हो गया है। इस विषमता के प्रति वे अपने मर्म को इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

''भारत, कहो आज क्या हो वही भारत अहो,/ हे! पुण्यभूमि।
कहाँ गयी वह तुम्हारी श्री कहो?/ अब कमल क्यों,
जल तक नहीं, सर मध्य केवल पंक है,/
वह राज राज कुबेर अब हा! रंक का भी रंक है।''[8]

'भारत भारती' के 'अतीत खण्ड' में भारतीयों के वीरता का वर्णन करके देशवासियों को प्रेरित किया गया है। अपने पूर्वजों के वीरता का वर्णन करते हुए कर्मवीर, दानवीर, युद्धवीर एवं धर्मवीरता के पूर्ण स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है–

''थे कर्म्मवीर कि मृत्यु का भी ध्यान कुछ धरते न थे,
थे युद्धवीर कि काल से भी हम कभी डरते न थे।
थे दानवीर कि देह का भी लोभ हम करते न थे,
थे धर्म्मवीर कि प्राण के भी मोह पर मरते न थे।''[9]

भारत–भारती में निहित राष्ट्रीय–चेतना के स्वर ने ही हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गौरव की भावनाएं उत्पन्न की। भारत–भारती की आरम्भिक पंक्तियॉ जो अतीत भारत वर्ष एवं भारतीयों के प्रशस्तमान बिन्दुओं का अंकन है

राष्ट्रीयता की उत्कृष्ट भावना और राष्ट्रीयता का चरम उत्कर्ष इनकी रचना में परिलक्षित होता है। कालजयी यह रचना भूतकाल को दर्पण की भॉति वर्तमान को वास्तविक प्रतिबिम्ब की भॉति और भविष्य को आदर्श बिम्ब के रूप में कल्पित करती है।

भारत–वासियों के अवनति का चित्रण करके वे उनके मन को पूर्व के उत्थान एवं वर्तमान के पतन के कारणों की तरफ लगाकर उनको सजीवता प्रदान करते हैं, जिससे देशवासी अतीत से प्रेरित होकर वर्तमान में मार्ग प्रशस्त कर सके–

''इस भाँति जब जग में हमारी पूर्ण उन्नति हो चुकी,
जैसे उठे थे, अन्त में हम ठीक वैसे ही गिरे! ।।''[10]

भारतवर्ष के अवनति के पीछे जो कारण थे उनका भी वर्णन निम्न पंकियों में करते हैं–

''फिर स्वार्थ ईर्ष्या–द्वेष का विष–बीज जो बोने लगा,
दुर्भावना के वारि से उग वह बड़ा होने लगा।
वे फूट के फल अन्त में यों फूल कर फलने लगे–
खाकर जिन्हें, जीते हुए ही, हम यहाँ जलने लगे।।''[11]

'भारतवर्ष' के अवनति के समय भी उन वीर–पुरुषों का वर्णन भी करते हैं जो इस विषमता में भी वीरतापूर्वक अपना पथ प्रशस्त किये हुए थे–

''विक्रम कि जिनका आज भी संवत यहाँ है चल रहा–
ध्रुव धर्म्म का ऐसे नृपों का उस समय भी बल रहा।
जिनसे अनेकों देश–हितकर पुण्यकार्य किये गये;
जो शक यहाँ शासक बने थे सब निकाल दिये गये।।''[12]

इस प्रकार 'भोज', 'शिवाजी' आदि के वीरता का वर्णन करते हुए देशवासियों में राष्ट्र के प्रति चेतना जागृत किया गया है।

'वर्तमान खण्ड' में स्त्रियों की शोचनीय स्थितियों का, कृषकों की विषमताओं का, सामाजिक विद्रूपताओं का, पूँजीवादियों का, अशिक्षा, तीर्थस्थल, धर्म, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य आदि की दीन–हीन स्थितियों का चित्रण करते हुए देशवासियों के सुप्त हृदय को अपने अस्मिता की रक्षा के लिए जागृत करने का प्रयत्न किया गया है।

'वर्तमान भारत' जो उस समय पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था उसका चित्रण निम्न पंक्तियों में किया गया है–

''यद्यपि हताहत गात में कुछ साँस अब भी आ रही
..... था जो जगत का मुकुट, है क्या
हाय! यह भारत वही।''[13]

जिस भारत–वर्ष की अपाला, गार्गी जैसी विदुषियों का ससम्मान आज भी स्मरण किया जाता है उसी भारत–वर्ष में 'वर्तमान' में स्त्रियों की दयनीयता का अत्यन्त कारूणिक चित्रण करते हैं–

''नारी–जनों की दुर्दशा हमसे कही जाती नहीं,
लज्जा बचाने को अहो! जो वस्त्र भी पाती नहीं।
जननी पड़ी है और शिशु उसके हृदय पर मुख धरे,
देखा गया है, किन्तु वे माँ–पुत्र दोनों हैं मरे।।''[14]

स्त्रियों की वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हुए देशवासियों को इस सन्दर्भ में सोचने के लिए अग्रसित करने को प्रेरित करते हैं–

''रखतीं यही गुण वे कि गन्दे गीत गाना जानतीं,
.....हँसते हुए हम भी अहो!
वे गीत सुनते सब कहीं,
रोदन करो हे भाइयों! यह बात हँसने की नहीं।।''[15]

'भविष्यत खण्ड' में देश के नवयुवाओं को सम्बोधित करते हुए लिखते हैं–

''हे नवयुवाओं! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
है मनुज जीवन की तुम्ही में ज्योति सब से जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा, योग देशोद्धार में ?
देखो कहाँ क्या हो रहा है आज कल संसार में।।''[16]

इस परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए संगठन एवं समरसता की आवश्यकता है इसलिए देशवासियों में बन्धुत्व की भावना उत्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम उन्हें आपस में संगठित करना चाहते हैं। इस सन्दर्भ में एक पंक्ति उल्लेखनीय है–

"प्रत्येक जन प्रत्येक जन को बन्धु अपना मान लो,?
सुख–दुःख अपने बन्धुओं का आप अपना मान लो।
सब दुःख यों बँट कर घटेगा सौख्य पावेंगे सभी
हाँ, शोक में सन्त्वना के गीत गावेंगे सभी।।"[17]

देशवासियों को प्राचीन भारत के गौरव के आधार पर अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए आह्वाहन किया गया है। देशवासियों के गुप्त हृदय में राष्ट्र–चेतना जागृत की गयी है–

"किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद–चिन्ह उनके यत्न–पूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व–गौरव–दीप को बुझने न देना चाहिए।।"[18]

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध काव्य कृति भारत–भारती में न केवल भारतीयों को उनकी गौरवपूर्ण प्राचीन विरासत से परिचित कराया है अपितु वर्तमान समस्याओं पर भी विचार के लिए प्रेरित किया है। जीवन किस प्रकार से जीना चाहिए न्यूनाधिक्य को त्यागकर सम्यक जीवन–दर्शन ही भारत–भारती के केन्द्र में है। राष्ट्रीयता की उत्कृष्ट भावना और राष्ट्रीयता का चरम उत्कर्ष इनकी रचना में परिलक्षित होता है। कालजयी यह रचना भूतकाल को दर्पण की भाँति वर्तमान को वास्तविक प्रतिबिम्ब की भाँति और भविष्य को आदर्श बिम्ब के रूप में कल्पित करती है। भूतकालीन इतिहास, धर्म, संस्कृति, राजनीति, अर्थनीति के परम वैभव को व्याख्यायित करती हुई यह रचना वर्तमान स्वस्थ धर्म, दर्शन, राजनीति तथा अर्थनीति के रूप का निर्धारण करती हुई आगामी उत्कर्ष और समृद्धि के लिए सचेत करती हुई उसके काल्पनिक रूप का भी दिग्दर्शन कराती है।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची</u> :–

1. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्र0, पृष्ठ सं0–109
2. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृ0 सं0–552
3. डॉ0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, पृष्ठ सं0–489
4. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्र0, पृष्ठ सं0–109
5. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, साहित्य सदन,झाँसी, दशम संस्करण, पृ0 सं0–109
6. वही, पृ0 सं0–171
7. वही, पृ0 सं0–85

8. वही, पृ0 सं0—85
9. वही, पृ0 सं0—49
10. वही, पृ0 सं0—68
11. वही, पृ0 सं0—68
12. वही, पृ0 सं0—72
13. वही, पृ0 सं0—85
14. वही, पृ0 सं0—89
15. वही, पृ0 सं0—163
16. वही, पृ0 सं0—172
17. वही, पृ0 सं0—158
18. वही, पृ0 सं0—155